Opening of Japan

जापान का इतिहास :

जापान पूर्वी एशिया का महत्वपूर्ण देश होते हुए भौगोलिक दृष्टिकोण से इस रूप में स्थित था, कि यूरोप के विभिन्न देशों की नजर इस पर लगी हुई थी। शुरू में जापान पूरी दुनिया से अलग - थलग था। प्रशांत महासागर के ठीक बीच में स्थित कई द्वीपों से घिरा हुआ एक ऐसा देश था जिसके बारे में दुनिया के लोगों को कोई जानकारी नहीं थी। धार्मिक रूप से प्रतिवह देश जापान अपने को सूर्य देवता और देवी के वंशज मानते थे।

इस मान्यता के अनुसार जापानी अपने - 2 के अनुसार जापानी अपने - आप को बहुत पवित्र और शुद्ध रूप में लेते थे, जिनका संसार के किसी भी देश के साथ कोई संबंध नहीं था। सिर्फ बौद्ध धर्मावलंबी तिब्बत या चीन के रास्ते जापान में धर्म प्रचार या पर्यटन के लिए आते थे।

यद्यपि जापान चारों तरफ से द्वीपों से घिरा हुआ देश था जिसके कुल देश का मात्र 17% कृषि या आर्थिक क्षेत्र कहलाता था। इसके चार द्वीप प्रमुख थे - होन्सू, क्यूसू, होक्कैदो, शिकोक, आर्थिक संसाधनों की कमी के बावजूद, प्राकृतिक रूप से जापान एक सुंदर देश या द्वीपों के चारों ओर पर्वत और पठारों की लंबी श्रृंखलों इसकी खूबसूरती को और बढ़ा देती थी।

15 वीं सदी तक दुनिया के लोग जापान के नाम से भी परिचित नहीं थे। पुर्तगाली यात्री मार्कोपोलो के यात्रा विवरण से विश्व के लोगों को जापान के बारे में पहली बार जानकारी मिली। मार्कोपोलो ने अपने यात्रा विवरण में समुद्री रास्तों

का भी प्रेरित किया था। अतः उससे प्रेरित होकर बड़ी संख्या में लोग प्रशांत महासागर में आने-जाने लगे। इस समय पुर्तगाल औद्योगिक वस्तुओं का केन्द्र बना हुआ था। अतः नाविक गतिविधियों में रुचि रखने वाले लोग पुर्तगाल की देखा-देखी जापान के किनारा आने-जाने लगे।

चूँकि जापान एक धार्मिक देश था, जिसे बाहरी चीजों का कोई भी ज्ञान नहीं था। शुरु में जापान ने किसी प्रकार का विरोध नहीं किया क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक या यूरोपीय देशों की मंशा उसकी समझ से पूरे थी। 15 वी० सदी से 16 वी सदी के बीच कई यूरोपीय देश जापानी बंदरगाहों पर आने-जाने लगे। संपर्क सुविधा की कमी होने के बावजूद लगातार आने-जाने से उनका विभिन्न यूरोपीय देशों से नए तरह का संपर्क कायम हो गया। सीधे-सादे जापानी अभी भी अपने सीमित संसाधनों में रहते थे भौतिक और राजनीतिक रूप से बाहरी चीजों से अनजान थे। लेकिन धीरे-2 यूरोपीय देश आपस में ही एक दूसरे के खिलाफ जापानियों को भड़काने लगे। आए दिन उनके बंदरगाहों पर झगड़े और गोलीबारी की घटनाएँ होने लगी।

ये सब देखकर जापानियों को यूरोपीय देशों की नियत पर शक होने लगा। इसी समय एक घटना घटी और फ्रांस के बीच भयंकर गोली बारी हुई, जिसने जापानी नौसेना अधिक को नष्ट कर दिया।

इस घटना के बाद पूरे जापान में सनसनी फैल गई अपनी सभ्यता संस्कृति और धर्म को बचाने के लिए शोगुन

निकाल कर जापान 16 वीं सदी के अंत में फिर से अपनी एकांकी जीवन की घोषणा कर और इस तरह जापान का दरवाजा यूरोप या विश्व के किसी भी देश के लिए पूरी तरह बंद हो गया।

सिर्फ बौद्ध धर्म प्रचार को और विद्यार्थियों को नागासाकी सहित कुछ बंदरगाहों पर आने-जाने की छूट मिली और इस तरह जापान पूरी दुनिया से अलग-थलग एकांतवास का जीवन जीने लगा। लगभग दो सौ सालों तक एकांकी जीवन जापान जीता रहा। बाहरी दुनिया की राजनीतिक समझदारी होने के बावजूद उसने कभी भी किसी देश से संपर्क स्थापित करने की कोशिश नहीं की। वह अपने सीमित संसाधनों के बीच अपनी सभ्यता और संस्कृति के साथ सिमटा रहा। लेकिन जैसे ही क्रीमियम युद्ध की सुगबुगाहट शुरू हुई। प्रशांत महासागर में यूरोपीय देशों की हलचलें फिर से बढ़ने लगीं।

यूरोप में रूस अकेला पड़ चुका था। और उसे एशिया में सहारे की तलाश थी। अतः रूस के कई जहाज जापानी बंदरगाहों के चक्कर लगाने लगे। इस क्रम में उसकी कई जहाजी बेड़े नष्ट होते गए। क्रीमिया के रूस सहित अधिक देश उलझने हुए थे, अमेरिका का ध्यान भी बहुत तेजी से जापान की तरफ गया, और अमेरिका ने सही मौका देखकर प्रशांत महासागर में अपनी गतिविधियाँ तेज कर ली।

इस समय अमेरिकी राष्ट्रपति फिलमोर थे, बहुत ही महत्वाकांक्षी व्यक्ति माने जाते थे, लगातार जब अमेरिकी जहाज जापानी बंदरगाहों तक पहुँचने में असफल रहा, तो राष्ट्रपति ने नौसेना के कुशल अधिकारी कमोडोर जेम्स को शक्तिशाली जहाजी बेड़ों के साथ जापान की तरफ भेजा, लेकिन जेम्स ने जापानी अधिकारियों से संबंध बनाने में असफल रहे। अतः

रावरूपाते ने नौसेना के दूसरे अधिकारी कमोडोर पेरी से दूत और नौसेना अधिकारी दोनों के रूप मे अपने एक पत्र के साथ जापान भेजा। लंबे संघर्ष के बाद पेरी येडो (टोकियो) की खाड़ी में पहुँचा और पहुँचने के साथ ही उसने जापानी अधिकारियों के साथ एक राजदूत की तरह व्यवहार किया। उसने जापानी अधिकारियों के साथ एक राजदूत की तरह व्यवहार किया।

उसने रावरूपाते का जापानी राजा के नाम दिया हुआ पत्र तथा उपहार के रूप मे रेलवे डाक और तार के कुछ नमूने दिए और साथ ही उसने अमेरिका के साथ संबंध बनाने की पेशकश की। उस समय पेरी अनिर्णय की स्थिति में जापान को छोड़कर इस चेतावनी के साथ वापस गया कि वह 1 साल बाद फिर वापस आएगा। लेकिन जैसे ही क्रीमिया के युद्ध मे सारे देश गंभीर रूप से उलझ गए राजनैतिक रूप से सही मौका देखकर अगस्त मे ही वह फिर से जापान आ पहुँचा। आने के साथ ही उसने समझौते के लिए दबाव डालना शुरू किया।

इधर जापान के अंदर एक लंबी-बहस यूरोपीय देशों के साथ संपर्क स्थापित करने को लेकर छिड़ चुकी थी। जापान पूरी तरह से दो वर्गों मे विभाजित था। जापान का युवा वर्ग जहाँ यूरोपीय देशों की सभ्यता संस्कृति और शिक्षा से प्रभावित होकर उनके साथ संबंध स्थापित करने की पक्षधर थी वहीं पुराने लोग भारत और चीन का उदाहरण देते हुए यह तर्क दे रहे थे कि विदेशी पहले हमारे साथ दोस्ती करेंगे। फिर हमें हथियार और ज्ञान देंगे और फिर उन्हीं साधनों से हमें अपना गुलाम बना लेंगे।

लेकिन अमेरिका का दबाव इतना ज्यादा था कि जापानियों के सामने कोई संधि करने के अलावे कोई विकल्प नहीं बचा। जापान अमेरिका के आधुनिक अस्त्र-शस्त्रों और तकनीकों का सामना किसी कीमत पर नहीं कर सकता था। अतः लंबे बहस के बाद 30 जनवरी 1855 को जापान और अमेरिकी के बीच कानागावा नामक स्थान पर संधि हुई। यह संधि व्यापारिक नहीं थी। यह सिर्फ दोनों के आपसी सहमति पर आधारित सुविधाओं प्राप्त करने से जुड़ी थी। लेकिन आंशिक तौर पर जापान का दरवाजा खुला। जिसकी देखादेखी मार्च में रूस ने अप्रैल मे इंग्लैण्ड ने, मई में फ्रांस ने और इस तरह एक-2 करके सभी यूरोपीय देशों ने अमेरिका की तरह जापान से संधि की। इस तरह जापान का दरवाजा विदेशियों के लिए खुला।

लेकिन अमेरिका इतने से संतुष्ट नहीं था। अगस्त में हाउनसेंड हैरिस ने जापान के साथ व्यापारिक संधि करने में सफल रहा साथ ही इस संधि में यह भी कहा गया। अगर भविष्य में जापान दूसरे किसी भी यूरोपीय देश के साथ किसी अन्य तरह की सुविधाओं वाली संधि करता है, तो वह सारी सुविधाएँ अमेरिका को स्वतः ही प्राप्त हो जाएगी। इस वह से यूरोप के विभिन्न देशों ने अमेरिका की तर्ज पर व्यापारिक सुविधाओं वाली संधि जापान से कर ली। और 1858 तक दरवाजा पूरी तरह से विदेशियों के लिए खुल गया।

जापान के एकांकी जीवन का अंत हुआ और एशिया के इतिहास में एक नए दौर की होड़ शुरू हुई। जिसने मध्य पूर्वी एशिया को विश्व इतिहास का केन्द्र बना दिया।

Dr. Priti Ranjan
H. D. Jain College (Ara)
Deptt of History
B.A Part - III
paper - VII
Topic - Opening of Japan